चेतना विकास मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम – एक संकलन

स्त्रोत: शिक्षा का लघु प्रस्ताव एवं चे.वि.मू.शि. सबंधित वस्तु – ए. नागराज

संकलन लक्ष्य: आ. नागराजजी द्वारा प्रदत्त शिक्षा पाठ्यक्रम का शीघ्र अवलोकन (quick reference)

* अपने अध्ययन हेतु नागराजजी द्वारा लिखित मूलपत्र को देखें

उद्देश्य:

मानवीयतापूर्ण जीवन को स्थापित करना:

- संस्कृति, सभ्यता, तथा उसकी स्थापना हेतु विधि व्यवस्था का अध्ययन कराना इससे मानव के चारो आयाम एवं पांचो स्थितियां के एक सूत्रता, अनन्यता प्रत्यक्ष हो
- समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओं को मानव चेतना में परिवर्तित करना, सह अस्तित्व, सामाजिक जीवन सुलभता
- प्रत्येक व्यक्ति में न्याय प्रदायी क्षमता, सही कार्य व्यवहार की योग्यता, बौधिक समाधान, भौतिक समृद्धि स्थापित करना, **जिससे** अखंड समाज में भागिदार हो
- एक सूत्रता स्थापित करना: शिक्षा प्रणाली, पद्धति एवं प्रणाली में; विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, एवं शिक्षा मंदिरों में; शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक में
- सामाजिक समानता, अधिक उत्पादन, कम उपभोग द्वारा अर्थ विषम प्रभाव का उन्मूलन

नीति

- शिक्षा प्रणाली एवं पद्धति राष्ट्रीय सीमावर्ती रहेगी
- जाती, वर्ग, एवं सम्प्रदाय विहीन अखंड समाज को पाने के लिए सार्वभौमिक सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राज्यनैतिक नीति
- प्राकृतिक, वेकृतिक ऐश्वर्य का साधानिकरण
- शिक्षा में औपचारिक्ता गौण रहेगा, व्यावहारिकता, प्रायोगिकता प्रधान रहेगा
- ग्रामीण एवं शहरी जीवन में दूरी मिटाना, ग्राम जीवन के प्रति दयनीय भाव समाप्त करना, गौरव, अनिवार्यता स्थापित करना

वस्तु विषय प्रणाली

प्राथमिक, माध्यमिक

- व्यवहार, व्यवसाय एवं व्यवस्था में प्रत्यक्ष होने वाले विषयों का चयन
- भूगोल, इतिहास के साथ मानवीयता का अध्ययन – इतिहास में मानवीयतापूर्ण जीवन को प्रेरणा देने वाली घटनाओं को वरीयता
- साहित्य के साथ तात्विक पक्ष
- विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष

स्नातक, स्नातकोत्तर

- दर्शन के साथ क्रिया पक्ष
- अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक, वैकृतिक ऐश्वर्य का सदुपयोग, सुरक्षा
- समाजशास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति सभ्यता
- मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष
- राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षण एवं संवर्धन

साहस, शौर्य, प्रतिभा को पुरस्कार, पारितोष पूर्वक प्रोत्साहन

प्रारंभिक शिक्षा | कक्षा १–५, आयु ६ से १०

primary

पद्धति: आज्ञापालन, और मूल्य: धीरता, वीरता, उदारता

Class time -30mins | periods-6 | Teaching 3 hrs | Play/Physical-3 hrs | Yog – 6 hrs

खेल, बोल, लेखन, आज्ञापालन, आचरण, कला–निर्माण, उत्पादन में प्रवृत्ति	
कृतज्ञता, धैर्य, साहस, उदारता	
प्रारंभिक गणित	
	कक्षा –१ | आयु ६
वस्तु	**पाठ**
अक्षर बोध	मानवीय गुण, स्वभाव, सम्बन्ध, आवश्यकता, उपयोगिता.
संख्या	शरीर कर्मइन्द्रीय, ज्ञानेंद्रीय, मूल्य, सम्बन्ध
	कक्षा –२ | आयु ७
वस्तु	**पाठ**
सम्बन्ध पहचान, चरित्र	निकट सम्बन्ध, उनका प्रयोजन
वस्तु पहचान	सामग्री, पेड़ पौधे पहचान, सामान्य उपयोग
संख्या	जोड़ घटाना
वस्तु	**पाठ**
	कक्षा –३ | आयु ८
सम्बन्ध, मूल्य संबोधन	जीने से जुड़े सम्बन्ध, स्थापित मूल्य, विश्वास, स्नेह
वस्तु – उपयोगिता	पाठ्य सामग्री, वस्त्र, आवास, अलंकार, वाहन
	कक्षा ४ | आयु ९
वस्तु	**पाठ**
सम्बन्ध –चरित्र	मूल्य–चरित्र, नैतिकता : जीने के उदाहरण सहित

वस्तु “है“– उपयोगिता, आवश्यकता	प्रकृति में वस्तु, नैसर्गिकता, उदाहरण
	कक्षा -५ | आयु १०
वस्तु	**पाठ**
सम्बन्ध में स्थापित, शिष्ट मूल्य,	• जीने के सभी सम्बन्ध – वर्तमान के लिए पाठ • सहकारिता, सहभागिता, कर्तव्य, दायित्व, पहचान एवं वहन: जैसे उत्पादन, सेवा में
भौतिक रासायनिक वस्तु: सीमा, आवश्यकता, उपयोगिता	• पदार्थ से प्राण और पुन: परिवर्तन, • इसका दृष्टा मानव

पूर्व माध्यमिक | कक्षा ६ से ८ आयु ११ से १३

secondary

पद्धति: अनुशासन, और मूल्य: धीरता, वीरता, उदारता, दया

Class time -40mins | periods-6 | Teaching 4 hrs | Play/Physical- 2.5 hrs | Yog -6.5 hrs

पठन, लेखन, खेल, कला –निर्माण
व्यवहार विज्ञान, भौतिक विज्ञान
व्यवसाय, उत्पादन, कला प्रदर्शन क्षमता विकास
व्यवसाय, व्यवहार, विचार, अनुभव समन्वय शिक्षा

	कक्षा - ६ | आयु ११
वस्तु	**पाठ**
संबंधों का वर्तना , व्यवसाय मूल्य में अर्पण, समर्पण	• परस्पर संबंधों में व्यवहार की अनिवार्यता, उत्पादन की आवश्यकता, दायित्व कर्तव्य वहन • शिष्ट, व्यवसाय मूल्य में अर्पण • समाज में संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था – उनकी अविभाज्यता
प्राणकोषा	• पदार्थ के स्वरुप, विकसित होकर प्राणअवस्था, • पौधों का गुण – विरचना, पुनह: पदार्थ, आवर्तनशीलता

	कक्षा ७ │ आयु १२
वस्तु	**पाठ**
मानव मूल्य का परवर्तन ही स्थापित, शिष्ट मूल्य	• मानव मूल्य = अर्थ, व्यवहार, व्यवसाय में दृढ़ता = धीरता, इस्ससे विचलित व्यक्ति को धीरता प्रदान करना = वीरता; सुविधा को अर्पित कर प्रसंन्न होना = उदारता • जीवन शक्तियों का सामान्य परिचय: आशा, विचार, इच्छा, संकल्प • विचार शक्ति का परावर्तन ही व्यवसाय/उपयोगिता एवं कला मूल्यों स्थापित होना
परमाणु, अणु, रचना, पिंड	• परमाणु में गठन, स्वरुप एवं विकास • प्राणकोषा, निष्प्राण कोषा • रचनायें परमाणु से अधिक नहीं होते
	कक्षा ८ │ आयु १३
वस्तु	**पाठ**
जीवन एवं जाग्रति पहचान	• १० क्रिया परिचय, परावर्तन, प्रत्यावर्तन, • देखना = समझना = पहचान क्षमता • अक्षय बल + अक्षय शक्ति = संचेतना
परमाणु गठनपूर्ण होने का सत्यता	• नैसर्गिकता के साथ संतुलित सम्बन्ध • व्यवसाय पद की पहचान, विचार शक्ति ही व्यवसाय में • जीवन के ४ आयाम (विचार, व्यव्हार, अनुभव, व्यवसाय) और समाज के चार आयाम (संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था) में सम्बन्ध

उच्च माध्यमिक | कक्षा ९ से ११ , आयु १४ से १६ **higher secondary** **पद्धति:** अनुशासन, और मूल्य: धीरता, वीरता, उदारता, दया Class time -50mins | periods-6 | Teaching 5 hrs | Play/Physical-2 hrs | Yog -7 hrs
कला निर्माण, आचरण, पठन, लेखन, खेल
व्यावहारिक, स्थाई मूल्यवत्ता ?, व्यवसाय मूल्य – आवश्यकता, उपयोगिता एवं प्रयोग : निपुणता, कुशलता | व्यवहार दक्ष, प्ररिश्रम के प्रति निष्ठा, व्यवसाय में स्वावलंबन में विश्वास
स्वभाव, संस्कार में गुणात्मक मानवीयतापूर्ण परिवर्तन प्रक्रिया = व्यक्तित्व निर्माण | जिसका प्रत्यक्ष रूप – बहु भोग के स्थान पर संयंत भोग,

	कक्षा ९ | आयु १४
वस्तु	**पाठ**
मानव जड़–चैतन्य का संयुक्त रूप	जीवन क्रिया –>मेधस –> शरीर –> कार्य व्यवहार (अधिक शक्ति, कम द्वारा प्रकाशन)
न्यायपूर्ण जीवन	• जीवन मूल्य के अर्थ में मानव मूल्य –> व्यवहार –> व्यवसाय मूल्य • उपरोक्त सार्थक होना ही सदुपयोग, सुरक्षा = नैतिकता = चरित्र = मूल्य = अविभाज्य
गठनपूर्णता का अध्ययन	• गठनशील = यांत्रिक; गठनपूर्ण = संचेतना • संज्ञानशील, संवेदनशील, • दृष्टा होना, दृष्टा पद = अनुभव प्रमाण • तन मन धन का सदुपयोग, धर्म नीति = समाज नीति =चरित्र, मूल्य से अविभाज्य

	कक्षा १० │आयु १५
वस्तु	**पाठ**
विवेक	• जीवन क्रियाशीलता, लक्ष्य, शक्ति परावर्तन, प्रत्यावर्तन • जीवन नित्य, शरीर नश्वर, व्यावहारिक जीवन के लिए अवश्यकीय नियम (३) – विवेक की आवश्यकता, प्रयोजन, • मूल प्रवृत्ति, आवेशित गति, स्वभाव गति, समाज लक्ष्य = राष्ट्र चेतना = समाज संचेतना • जीवन तृप्ति – समाधान, प्रमाणिकता, निरंतरता • =मानव में चारों आयाम में सामरस्यता का आधार = ऐसा मानव ही पूर्ण एवं सामाजिक • व्यक्ति का परिचय = परिवार > समाज > राष्ट्र >अन्तर्राष्ट्र│ • समाधान = अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था = ५ आयाम, १० सोपान
४ अवस्था में विकास का क्रम	• वस्तु स्थिति, वस्तुगत सत्य – रूप गुण स्वभाव धर्म , देश, दिशा, काल • देखना = समझना│रूप का आंशिक भाग आँखों में • भौतिक रासायनिक रचना का दृष्टा जीवन, विज्ञान > तकनीकी > कर्माभ्यास • प्रारब्ध
	कक्षा ११ │आयु १६
वस्तु	**पाठ**
स्वत्व स्वतंत्रता	मानवीयता = संयंत = अपव्यय से मुक्त = तन मन धन सदुपयोग, सुरक्षा = अधिक उत्पादन, कम उपभोग मानव स्वत्व = मानवीयता = अधिकार का आधार =स्वतंत्रता
क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता	कारण, गुण, गणित पूर्वक निर्णय पाने की व्यवस्था आँखों से अधिक समझ, जैसे है, वैसे समझना स्थिति सत्य, वस्तुगत, वस्तु स्थिति जाग्रति क्रम, क्रिया, आचरण पूर्णता : दया कृपा करुणा

उच्च शिक्षा/ स्नातक |कक्षा १२ से १४, आयु १७ से १९ **पद्धति:** स्वानुशासन, और मूल्य: धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा **graduation** Class time -60mins | periods-7 | Teaching 7 hrs | Play/Physical - 1 hr | Yog -8 hrs	
व्यक्तित्व, आचरण, उत्पादन, निबंध–पठन, कला–निर्माण, खेल	
दर्शन –शास्त्र (सामाजिक/धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक) अनिवार्य + minimum of 3 subjects as optional	
आचरण, व्यक्तित्व की महत्ता, उत्पादन में सम्भावना, सहायक क्षमता	
	कक्षा १२ |आयु १७ First Year Graduation
वस्तु	**पाठ**
जाग्रतिक्रम, जाग्रति	गुणात्मक विकास > अमानवीय > मानवीय > अतिमानवीय परिष्कृत चेतना = मानव संचेता = संज्ञानशीलता = संवेदनाएं नियंत्रित संचेतना ही अल्प, अर्ध, जागृत, पूर्ण जागृत में प्रकाशन > क्रिया, आचरण पूर्णता मानव संचेतना = सहअस्तित्व जाग्रति = जीवन का परम लक्ष्य = तन मन धन सदुपयोग, सुरक्षा • जाग्रति का भास् = आज्ञापालन (कक्षा १ से ५) • आभास (अपेक्षा) = अनुशासन (कक्षा ६ से १०) • प्रतीति = स्वानुशासन क्रम ?? – ११, १२ ?? • जाग्रति = स्वानुशासन (१२–१४)
धीरता ... करुणा	• मानव मूल्य : धीरता, वीरता, उदारता, दया कृपा करुणा • सामान्य आकंक्षा, महत्वाकांक्षा के लिए वस्तु निर्माण, उपयोगिता और प्रयोजन बोध • उपयोगी वस्तु निर्माण में विज्ञान, तकनीकी, कर्माभ्यास

	कक्षा १३ | आयु १८ Second Year Graduation
वस्तु	**पाठ**
सत्य में अनुभव	• सत्ता, अरूप, अस्तित्व, जड़–चैतन्य प्रकृति में संपृक्त, • सत्ता में अनुभव पर्यंत विकास के लिए बाध्य होना
	• सत्ता ही नियम, न्याय, धर्म, सत्य • मानव ही मानव के ह्रास एवं विकास का कारण • शिक्षा प्रदान करना = योग्यता अनुसार उचित कक्षा में अवसर प्रदान करना • सत्ता में अनुहूत
मध्यस्थ क्रिया, बल, शक्ति	• अंश > इकाई – उर्जामय, आकर्षण, गठन, मध्यस्थ बल, शक्ति, क्रिया • प्राण कोषा, निष्प्राण कोशिका, शरीर = भौतिक रासायनिक सीमा + जीवन = मानव • सम्पूर्ण मापदंड का निर्माण मानव है • कर्माभ्यास, उत्पादन
	कक्षा १४ | आयु १९ Third Year Graduation
वस्तु	**पाठ**
तीनों वाद	• भौतिकवाद, जनवाद, अध्यात्मवाद • मध्यस्थ क्रिया सैम विषम को संतुलित करता है • षड विकार = आवेशित गति x • स्वभाव गति = मूल प्रवृत्ति = बौधिक नियम
अस्तित्व स्थिर, विकास, जाग्रति निश्चित है	• अस्तित्व क्यों है, कैसे है, कितना है • रूपात्मक, अरुप्तामक अस्तित्व– अस्तित्व धर्म • विकास = क्रम = नियति = व्यवस्था • प्रमाण = पाठ = प्रबोधन = समाधान • नियम = न्याय = धर्म = सत्य = इश्वर = आनंद = जीवन = नियम

स्नतकोत्तर | कक्षा १५ से १६ | आयु – २० से २१ **post graduation** Class time -60mins | periods-7 | Teaching 7 hrs | Play/Physical- 1 hr | Yog -8 hrs
व्यक्तित्व, आचरण, उत्पादन, निबंध–पठन, प्रबंध–निर्माण, खेल
दर्शन शास्त्र compulsary subjects (भौतिकवाद, जनवाद, अध्यात्मवाद) + 2 optional subjects for major
मानवीयता विधि
उत्पादन, व्यक्तित्व में संतुलन / समन्वय
शोध | अनुसन्धान **research/doctorate**
ऐच्छिक विषय: व्यवहार (अखंड समाज के परिप्रेक्ष्य में), व्यवसाय (सामान्य, महत्वाकांक्षा), स्वास्थ्य के सीमा में
वर्तमान में पाए जाने वाली व्यावहारिक एवं व्यावसायिक समस्याओं के परिहार
technical education
समानाय आकांक्षा, महत्वकांक्षा वस्तु निर्माण हेतु – अधिक उत्पादन, कम उपयोग
तकनीकी शिक्षा के साथ सामाजिकता, व्यावहारिकता, तथा व्यक्तित्व में निष्ठा को व्यावहारिक रूप देना
कृषि उद्योग, स्वास्थ्य

Adult Education
LIteracy + encouragement to live in मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, उत्पादन तथा उनमे समन्वयता
कला + व्यक्तित्व को प्रोत्साहन
प्रकृति के विकास, इतिहास, तथा मानव जीवन एवं जीवन के कार्यक्रम सम्बन्धी प्रणाली
साहसिकता, स्थापित मूल्यों का अध्ययन, वर्ग विहीन समाज, |
स्थानीय संपदा का उपयोग आर्थिक विषमता दूर होना, आत्मनिर्भर होनाः ग्राम उद्योग, कुटीर उद्योग, ग्राम जीवन में विश्वास व्यवहारिक एवं व्यावसायिक समस्याओं का समाधान

शिष्ट मंडल National Education Mission
राष्ट्र स्तरीय, शोध–अनुसन्धान कर्ताओं का समावेश – शिक्षा नीति, प्रणाली के प्रति दायित्व –
शिक्षा संस्थाओं के दायित्व निर्धारण, आदेश, दिशा निर्देश का अधिकारी
शासन इनके प्रस्तावनाओं के पलिए बाध्य
व्यक्तिगत प्रस्ताव का अवगाहन, सम्मान, पुरस्कार
मानवीय पद्धति; जिससे परस्पर मंडलों में विरोध न हो
शिक्षा के सार्वभौमता के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंडल – अखंड समाज के निरंतरता हेतु

शिक्षण संस्था **educational institution**
Adult literacy + education for every child in their area
सामाजिक, आर्थिक, राज्यनैतिक, व्यावहारिक व्यवस्था की परस्परता में समस्याओं का सर्वेक्षण, स्थानीय स्थिति का चित्रण अधिकार, वैध प्रणाली का पालन social, economic, political, behavioral survey of local issues.
प्रबंधन
प्रत्येक स्तर में शिक्षक, प्रशीक्षक, व्यवस्थापक, को उनके व्यक्तित्व, उत्पादन, शिक्षण, प्रशिक्षण की क्षमता का निर्धारण, स्वास्थ्य एवं आयु पात्रता कार्यकर्ता अपने निकटतम वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार कार्य करेंगे; वरिष्ठ अधिकारी निम्न स्तर के चित्रणों का परीक्षण करेंगे दैनन्दिनी में कार्यो एवं आदेशों का लेखन, (maintain a register of work done, and orders recieved with signatures); इसी के आधार पर नियुक्तियां, प्रतिफल मान, उन्नति, प्रोत्साहन, पारितोषिक एवं सम्मान – राष्ट्र में एक सा होना

- संकलन – श्रीराम नरसिम्हन | विद्यार्थी | पुणे | ५ जनवरी २०१९